

नं. २५२ काययोगी जीवोंके आलाप.

| गु | ज | प | प्रा. | सं | ग | इं. | क | यो | व | क | इ | सं | द | ले | भ. | स | सं | अ | उ. |
|----|----|---|-------|------|----|-----|---|----|----|----|---|----|---|------|----|---|------|----|-----|
| | ी. | . | | . | ा. | | ा | . | . | . | ा | य | . | . | | . | ज्ञि | ा. | |
| १ | १ | ६ | १०, | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | द्र. | २ | ६ | २ | २ | २ |
| ३ | ४ | प | ७ | क्षी | | | | क | अ | अ | | | | ६ | भ. | | सं. | अ | सा |
| अ | | . | ९,७ | ण | | | | ा | प | क | | | | भा | अ | | अ | ह | का |
| यो | | ६ | ८,६ | सं | | | | य. | ग | षा | | | | . | . | | सं. | र | . |
| . | | अ | ७,५ | . | | | | | ा. | . | | | | ६ | | | अ | अ | अ |
| वि | | . | ६,४ | | | | | | | | | | | | | | नु. | ना | ना. |
| ना | | ५ | ४,३ | | | | | | | | | | | | | | | हा | यु. |
| . | | प | ४,२ | | | | | | | | | | | | | | | र | उ. |
| | | . | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | ५ | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | अ | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | . | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | ४ | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | प | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | . | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | ४ | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | अ | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | . | | | | | | | | | | | | | | | | | |

कायजोगी जीवोंके आलाप कहनेपर--- आदिके तेरह गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चार प्राण और दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजातिसे लेकर पांचों जातियां, पृथिवीकायको आदि लेकर छहों काय, सातों काययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

उन्हीं काययोगी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर--- आदिके तेरह गुणस्थान, पर्याप्तसम्बन्धी सात जीवसमास, छहों पर्याप्तियां पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां;

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरस गुणद्वाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियादि पंचजादीओ, पुढविकायादिछक्काया, वेउव्वियमिस्सेण विणा छ जोगा तिण्णि वा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो आहारिणो चैव वा, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा२५३ ।

नं. २५३ काययोगी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|------|----|----|-----|---|-----|-----|----|----|----|---|----|---|---|----|---|---|
| गु | जी | प. | प्रा | सं | ग. | इं. | क | यो. | वे. | क | इ | सं | द | ले | ५ | स | सं | अ | उ |
| . | . | . | . | . | . | . | I | . | . | II | य. | . | . | I. | . | इ | I. | . | |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|----|------|---|---|---|-----|----|----|---|---|---|------|----|----|----|----|---|--|
| | | | | | | | . | | | | . | | | | | | । | | | |
| १ | ७ | ६ | १ | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ | ३ | ४ | ८ | ७ | ४ | द्र. | २ | ६ | २ | २ | २ | |
| ३ | पय | ५ | ० | क्षी | | | | वै. | अ | अ | | | | ६ | २ | सं | अ | स | | |
| अ | ि. | ४ | ९ | ण | | | | मि. | प | क | | | | भा | ।. | . | ह | क | | |
| यो | | | ८ | सं | | | | वि | ग. | षा | | | | . | अ | अ | ।. | ।. | | |
| . | | | ७ | . | | | | ना. | | . | | | | ६ | . | सं | अ | अ | | |
| वि | | | ६ | | | | | अथ | | | | | | | . | . | ना | ना | | |
| ना | | | ४, | | | | | ।. | | | | | | | अ | . | . | . | | |
| . | | | ४ | | | | | ३ | | | | | | | नु | . | अ | यु | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | थ | . | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | . | उ | . | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | १ | . | . | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | अ | . | . | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | ह | . | . | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | ।. | . | . | |

दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, वैक्रियिकमिश्रकाययोगके बिना छह काययोग अथवा औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये तीन काययोग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक; असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है; आहारक, अनाहारक अथवा आहारक ही होते हैं; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार-अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|---|----|------|---|---|---|-----|----|----|----|----|----|------|-----|------|----|----|----|---|
| ५ | ७ | ६ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | ४ | ३ | ४ | ६ | ४ | ४ | द्र. | २ | ५ | २ | २ | २ | |
| मि | अ | अ | ७ | क्षी | | | | अ | अ | अ | वि | अ | | २ | २ | स | सं | अ | स | |
| . | र्या | . | ६ | ण | | | | ै. | प | क | भं | सं | | क | ।. | म्य | . | ह | क | |
| सा | . | ५ | ५ | सं | | | | मि | ग. | षा | . | . | | ।. | अ | ग्मि | अ | र | ।. | |
| . | | अ | ४ | . | | | | . | . | . | म | स | | शु | . | . | सं | . | अ | |
| अ. | | . | ३, | | | | | वै. | | | नः | म | | .भ | | वि | . | अ | ना | |
| प्र. | | ४ | २ | | | | | मि | | | वि | ।. | छे | ।. | ना. | अ | नु | हा | . | |
| स. | | अ | | | | | | . | | | ना | छे | दो | ६ | | नु | . | र | यु | |
| | | . | | | | | | अ | | | . | दो | . | | | | | | . | उ |
| | | | | | | | | ।. | | | | य | | | | | | | | . |
| | | | | | | | | मि | | | | था | | | | | | | | . |
| | | | | | | | | . | | | | . | | | | | | | | . |
| | | | | | | | | क | | | | . | | | | | | | | . |
| | | | | | | | | । | | | | | | | | | | | | . |
| | | | | | | | | र्म | | | | | | | | | | | | . |
| | | | | | | | | . | | | | | | | | | | | | . |

२५४ तेषिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंचव (प्रतिषु 'चत्तारि' इति पाठः)
गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा,
छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-
चत्तारिपाण-तिण्णिपाण-दोपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-
आदि पंचजादीओ, पुढविकायादिछक्काया, चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि, चत्तारि
कसाया अकसाओ वा, छण्णाणाणि, चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण काउ-
सुक्कलेस्साओ, भावेण

योग ही बनते हैं। इसी प्रकार आहारमार्गणाके कथनमें पहले आहारक और अनाहारक ये दो आलाप बतलाये हैं अनन्तर एक आहारक आलाप ही बतलाया है। इसका भी कारण यह है कि तेरहवें गुणस्थानमें केवलिसमुद्घातके समय भी पर्याप्तताके स्वीकार कर लेनेसे आहारक और अनाहारक दोनों आलाप बन जाते हैं। परंतु कपाट, प्रतर और लोकपूरण अवस्थामें केवल अपर्याप्तताके स्वीकार कर लेनेपर काययोगियोंकी पर्याप्त अवस्थामें अनाहारक आलाप नहीं बनता है। इसका यह तात्पर्य हुआ कि जब काययोगियोंके पर्याप्त अवस्थामें छह योग कहे जावें, तब आहारक और अनाहारक ये दोनों ही आलाप कहना चाहिए और जब पर्याप्तसम्बन्धी केवल तीन योग ही कहे जावें तब एक आहारक आलाप ही कहना चाहिए। (सातों संयमोंके सम्बन्धमें भी यही विवक्षा भेद जान लेना चाहिये।)

उन्हीं काययोगी जीवोंके अपर्याप्त कालसम्बन्धी आलाप कहनेपर--- मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान; सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण और दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीण संज्ञास्थान भी है; चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये चार योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है; चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि और मनःपर्ययज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और

छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण वा ।

कायजोगि-मिच्छाङ्गीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणङ्गाणं, चोदस जीवसमासा, छ पज्जतीओ छ अपज्जतीओ पंच पज्जतीओ पंच अपज्जतीओ चत्तारि पज्जतीओ चत्तारि अपज्जतीओ, दसपाण-णवपाण-सत्तपाण-अड्डपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण- तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एङ्गदियजादि-आदि पंचजादीओ, पुढविकायादिछक्कया, पंच कायजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि,

असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२५५।

नं. २५५ काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | ज | प. | प्रा | सं | र | इं | क | यो | व | क | इ | सं | द. | ले | भ. | स | सं | अ | उ |
|-----|----|----|------|----|---|----|-----|----|---|---|---|----|------|------|----|----|----|----|----|
| | ी. | | . | . | । | . | । | . | . | . | । | य. | | . | | . | इ | । | . |
| १ | १ | ६ | १ | ४ | ४ | ५ | ६ | ५ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | द्र. | २ | १ | २ | २ | २ |
| मि | ४ | प. | ०, | | | | | अ | | | अ | अ | चक्ष | ६ | भ. | मि | सं | अ | स |
| . | | ६ | ७ | | | | पै. | | | | इ | सं | जु. | भा | अ | . | . | ह | क |
| | | अ. | ९, | | | | २ | | | | । | . | अत्त | . | . | | अ | । | । |
| | | ५ | ७ | | | | वै. | | | | . | | । | ६ | | | सं | अ | अ |
| | | प. | ८, | | | | २ | | | | | | | | | | . | ना | ना |
| | | ५ | ६ | | | | क | | | | | | | | | | | . | . |
| | | अ. | ७, | | | | । | | | | | | | | | | | | |
| | | ४ | ५ | | | | १ | | | | | | | | | | | | |
| | | प. | ६, | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | ४ | ४ | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | अ. | ४, | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | ३ | | | | | | | | | | | | | | | | |

यथाख्यात ये चार संयम; चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसें छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तिया; दशों प्राण, सात प्राण;आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना पांच काययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंचजादीओ, पुढविकायादिछक्काया, वे जोगा, तिण्णिवेदा, चत्तारि कसाया, तिण्ण अण्णाणाणि असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णणो असण्णणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वार५६ ।

नं. २५६ काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी | प. | प्रा | सं | ग. | इं. | क | यो. | वे. | क | इ | सं | द | ले | भ. | स | सं | अ | उ |
|-----|----|----|------|----|----|-----|---|-----|-----|---|---|----|---|------|----|----|----|---|---|
| | . | . | . | . | . | . | । | . | . | । | । | य. | . | . | . | . | । | । | . |
| १ | ७ | ६ | १ | ४ | ४ | ५ | ६ | २ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | द्र. | २ | १ | २ | १ | २ |
| मि | पय | ५ | ० | | | | | औ | | | अ | अ | ८ | ६ | भ. | मि | सं | अ | स |
| . | । | ४ | ९ | | | | | .१ | | | इ | सं | । | भा | अ | . | . | । | । |
| | | | ८ | | | | | वै. | | | । | . | ६ | . | . | | अ | । | । |
| | | | ७ | | | | | १ | | | . | | । | ६ | | | सं | | र |

छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२५७।

नं. २५७ काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी | प. | प्रा | सं | ग. | इं. | क | यो. | वे. | क | इ | सं | द | ले | भ. | स | सं | अ | उ |
|-----|------|----|------|----|----|-----|---|------|-----|---|----|----|---|------|----|----|----|----|----|
| | . | . | . | . | . | . | । | . | . | . | । | य. | . | . | . | . | इ | । | . |
| १ | ७ | ६ | ७ | ४ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | द्र. | २ | १ | २ | २ | २ |
| मि | अ | अ | ७ | | | | | औ | | | कु | अ | ८ | २ | भ. | मि | सं | अ | स |
| . | र्या | . | ६ | | | | | .मि | | | म. | सं | । | क | अ | . | .ह | । | । |
| | . | ५ | ५ | | | | | . | | | कु | . | ६ | । | . | | अ | । | । |
| | | अ | ४ | | | | | वै. | | | शु | | । | शु | | | सं | अ | र |
| | | . | ३ | | | | | मि. | | | | | . | . | | | . | ना | अ |
| | | ४ | | | | | | का | | | | | अ | भा | | | | . | ना |
| | | अ | | | | | | र्म. | | | | | ८ | . | | | | | क |
| | | . | | | | | | | | | | | । | ६ | | | | | र |

कायजोगि-सासणसम्माइड्डीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वानं, दो जीवसमासा, छ पज्जतीओ छ अपज्जतीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पंच जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२५८।

नं.२५८ काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु | जी | प. | प्रा | सं | ग. | इं. | क | यो. | वे. | क | इ | सं | द | ले | भ. | स | सं | अ | उ |
|----|-----|----|------|----|----|------|-----|-----|-----|---|---|----|---|------|----|---|----|----|----|
| | . | . | . | . | . | . | । | . | . | । | . | य. | . | . | . | . | इ | । | . |
| १ | २ | ६ | १ | ४ | ४ | १ | १ | ५ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | द्र. | १ | १ | १ | २ | २ |
| सा | सं. | प. | ० | | | पंचे | त्र | औ | | | अ | अ | ट | ६ | भ. | स | सं | अ | स |
| . | प. | ६ | ७ | | | . | स | .२ | | | इ | सं | । | भा | | । | . | । | । |
| | सं. | अ | | | | | . | वै. | | | । | . | । | ६ | | । | | । | । |
| | अ. | . | | | | | | २ | | | . | | । | ६ | | | | अ | अ |
| | | | | | | | | का | | | | | | | | | | ना | ना |
| | | | | | | | | .१ | | | | | | | | | | . | . |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना पांच काययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेसिं चैव पञ्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पञ्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि

कसाया, तिणिण अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया,
सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२५९।

नं.२५९ काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी | प. | प्रा | सं | ग. | इं. | क | यो. | वे. | क | इ | सं | द | ले | भ. | स | सं | अ | उ |
|-----|-----|----|------|----|----|------|-----|-----|-----|---|------|----|---|------|----|---|----|---|----|
| | . | . | . | . | . | . | । | . | . | . | । | य. | . | . | . | . | । | । | . |
| १ | १ | ६ | १ | ४ | ४ | १ | १ | २ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | द्र. | १ | १ | १ | १ | २ |
| सा | सं. | | ० | | | पंचे | त्र | औ | | | कु | अ | ८ | ६ | भ. | स | सं | अ | स |
| . | प. | | | | | . | स | .१ | | | म. | सं | । | भा | | । | . | ह | क |
| | | | | | | | . | वै. | | | कु | . | ६ | . | | | | र | । |
| | | | | | | | | १ | | | श्रु | | । | ६ | | | | | र |
| | | | | | | | | | | | . | | | | | | | | अ |
| | | | | | | | | | | | वि | | | | | | | | ना |
| | | | | | | | | | | | भं | | | | | | | | क |
| | | | | | | | | | | | . | | | | | | | | र |

नं.२६० काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी | प. | प्रा | सं | ग. | इं. | क | यो. | वे. | क | इ | सं | द | ले | भ. | स | सं | अ | उ |
|-----|-----|----|------|----|----|-----|-----|-----|-----|---|----|----|---|------|----|---|----|---|---|
| | . | . | . | . | . | . | । | . | . | . | । | य. | . | . | . | . | । | । | . |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | ३ | १ | १ | ३ | ३ | ४ | २ | १ | २ | द्र. | १ | १ | १ | २ | २ |
| सा | सं. | अ | | | | ति | त्र | औ | | | कु | अ | ८ | २ | भ. | स | सं | अ | स |
| . | अ | . | | | | . | स | .मि | | | म. | सं | । | क | | । | . | ह | क |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--|--|--|--|--|-----|---|------|--|--|------|---|-----|----|--|--|--|----|----|---|
| | | | | | म. | . | . | | | कु | . | क्ष | ।. | | | | | । | |
| | | | | | दे. | | वै. | | | श्रु | | जु | शु | | | | | अ | र |
| | | | | | | | मि. | | | | | . | . | | | | | ना | अ |
| | | | | | | | का | | | | | अ | भा | | | | हा | ना | |
| | | | | | | | र्म. | | | | | ट | . | | | | र | क | |
| | | | | | | | | | | | | ।. | ६ | | | | | र | |

२६०तेसिं चव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्धाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी,

उन्ही काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर--- एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्ही काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर--- एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग,

तसकाओ, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

कायजोगि-सम्मामिच्छाङ्गीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जतीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२६१।

नं.२६१ काययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

| गु. | जी | प. | प्रा | सं | ग. | इं. | क | यो. | वे. | क | इ | सं | द | ले | भ. | स | सं | अ | उ |
|-----|-----|----|------|----|----|------|-----|-----|-----|---|-----|----|-----|------|----|---|----|---|----|
| . | . | . | . | . | . | . | । | . | . | . | । | य. | . | . | . | . | इ | । | . |
| . | . | . | . | . | . | . | . | . | . | . | . | . | . | . | . | . | . | . | . |
| १ | १ | ६ | १ | ४ | ४ | १ | १ | २ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | द्र. | १ | १ | १ | १ | २ |
| स | सं. | | ० | | | पंचे | त्र | औ | | | इ | अ | च | ६ | भ. | स | सं | अ | स |
| म्य | प. | | | | | . | स | .१ | | | । | सं | । | भा | | म | . | ह | क |
| . | | | | | | . | वै. | १ | | | न | . | क्ष | . | | । | | र | । |
| | | | | | | | | | | | ३ | | जु | ६ | | | | | र |
| | | | | | | | | | | | अ | | . | | | | | | अ |
| | | | | | | | | | | | इ | | | अ | | | | | ना |
| | | | | | | | | | | | । | | | च | | | | | क |
| | | | | | | | | | | | . | | | । | | | | | र |
| | | | | | | | | | | | मि | | | क्ष | | | | | |
| | | | | | | | | | | | श्र | | | जु | | | | | |
| | | | | | | | | | | | . | | | . | | | | | |

कायजोगी-असंजदसम्मामिच्छाङ्गीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जतीओ छ अपज्जतीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि

वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति,

गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पंच जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दब्ब-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वार६२।

नं.२६२

काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|-----|----|------|----|----|------|-----|-----|---|---|----|----|----|------|----|---|----|---|---|
| गु | जी | प. | प्रा | सं | ग. | इं. | क | यो. | व | क | इ | सं | द. | ले | भ. | स | सं | अ | उ |
| | . | . | . | . | | | । | | . | . | ॥ | य. | | . | . | । | । | . | |
| १ | २ | ६ | १ | ४ | ४ | १ | १ | ५ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | द्र. | १ | ३ | १ | २ | २ |
| अ | सं. | प. | ० | | | पंचे | त्र | औ | | | म | अ | के | ६ | भ. | अ | सं | अ | स |
| वि | प. | ६ | ७ | | | . | स | .२ | | | ति | सं | द. | भा | पै | . | । | । | । |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|-----|---|--|--|--|--|---|-----|--|--|------|---|----|---|--|------|----|----|
| . | सं. | अ | | | | | . | वै. | | | . | . | वि | . | | . | र | । |
| | अ. | . | | | | | | २ | | | श्रु | | ना | ६ | | क्षा | अ | र |
| | | | | | | | | का | | | त. | | . | | | क्षा | ना | अ |
| | | | | | | | | .१ | | | अ | | | | | यो | हा | ना |
| | | | | | | | | | | | व. | | | | | . | र | क |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | र |

नं. २६३ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|-----|----|------|----|----|------|-----|-----|-----|------|----|----|----|------|----|------|----|---|----|
| गु | जी | प. | प्रा | सं | ग. | इं. | क | यो. | वे. | क | इ | सं | द. | ले | भ. | स | सं | अ | उ |
| . | . | . | . | . | . | . | । | . | . | । | य. | . | . | . | . | । | । | . | . |
| १ | १ | ६ | १ | ४ | ४ | १ | १ | २ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | द्र. | १ | ३ | १ | १ | २ |
| अ | सं. | | ० | | | पंचे | त्र | औ | | | म | अ | के | ६ | भ. | अ | सं | अ | स |
| वि | प. | | | | | स | स | .१ | | | ति | सं | द. | भा | | पैप | . | ह | क |
| . | | | | | | . | . | वै. | | | . | . | वि | . | . | क्षा | र | । | र |
| | | | | | | १ | | १ | | श्रु | | | ना | ६ | | क्षा | | अ | ना |
| | | | | | | | | | | त. | | | . | | | यो | | क | र |
| | | | | | | | | | | अ | | | | | . | | | र | |
| | | | | | | | | | | व. | | | | | | | | | |

२६३तेसिं चैव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो,

त्रसकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये पांच योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर--- एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और

तिष्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिष्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्धाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिष्णि जोगा, इत्थिवेदेण विणा दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिष्णि णाणाणि, असंजमो, तिष्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिष्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा २६४ ।

नं.२६४ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| स | जी | प. | प्रा | सं | ग. | इं. | क | यो. | वे. | क | इ | सं | द. | ले | भ. | स | सं | अ | उ |
|-----|-----|----|------|----|----|------|-----|-----|-----|---|----|----|----|------|----|---|----|----|---|
| गु. | . | . | . | . | . | . | । | . | . | . | ॥ | य. | . | . | . | . | इ | । | . |
| १ | १ | ६ | ७ | ४ | ४ | १ | १ | ३ | २ | ४ | ३ | १ | ३ | द्र. | १ | ३ | १ | २ | २ |
| अ | सं. | अ | | | | पंचे | त्र | औ | पु. | | म | अ | के | २ | भ. | अ | सं | अ | स |
| वि | अ. | . | | | | . | स | .मि | न. | | ति | सं | द. | क | पै | . | ।ह | ।क | |
| . | | | | | | . | . | . | | . | . | वि | ।. | . | . | . | ।. | ।. | |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--|--|--|--|--|--|--|--|------|--|--|------|--|----|----|---|------|--|----|----|
| | | | | | | | | वै. | | | श्रु | | ना | शु | | क्षा | | अ | अ |
| | | | | | | | | मि. | | | त. | | . | . | | . | | ना | ना |
| | | | | | | | | का | | | अ | | | भा | | क्षा | | . | . |
| | | | | | | | | र्म. | | | व. | | | . | | यो | | | |
| | | | | | | | | | | | | | ६ | | . | | | | |

कायजोगि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो,

भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर--- एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये तीन योग; स्त्रीवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल

तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२६५।

नं. २६५ काययोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप.

| गु. | ज | प | प्रा | सं | ग. | इं. | का | यो | व | क | इ | सं | द. | ले | भ | स | सं | अ | उ |
|-----|----|---|------|----|----|------|-------|----|---|------|----|----|-----|------|------|------|----|----|----|
| | ी. | . | . | . | | | . | . | . | . | ा | य. | | . | ा. | . | इ | ा. | . |
| | | | | | | | | | | | . | | | | | | ा | | |
| १ | १ | ६ | १ | ४ | २ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ३ | १ | ३ | द्र. | १ | ३ | १ | १ | २ |
| दे | सं | | ० | | ति | पंचे | त्रस् | अ | | | म | दे | के | ६ | भ | अ | सं | अ | स |
| श. | . | | | | . | . | ा. | ी. | | | ति | श | द. | भा | ा. | ौप | . | ह | क |
| | प. | | | | म. | | | | | श्रु | . | . | विन | . | . | . | ा | ा. | ा. |
| | | | | | | | | | | त. | | | ा | ३ | क्षा | | | | अ |
| | | | | | | | | | | अ | | | | शु | . | क्षा | | | ना |
| | | | | | | | | | | व. | | | | भ. | यो | | | | . |

काययोगि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाणा-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-आहार-आहारमिस्स इदि तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि१ (प्रतिषु 'तिण्णि' इति पाठः।) णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२६६।

नं. २६६ काययोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| गु. | ज | प | प्रा | सं | ग. | इं. | का | यो | व | क | इ | सं | द. | ले | भ | स | सं | अ | उ |
|------|----|---|------|----|----|------|-------|----|---|---|----|----|-----|------|----|------|----|----|----|
| | ी. | . | . | . | | . | . | . | . | . | ा | य. | | . | ा. | . | डि | ा. | . |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| १ | २ | ६ | १ | ४ | १ | १ | १ | ३ | ३ | ४ | ४ | ३ | ३ | द्र. | १ | ३ | १ | १ | २ |
| प्रम | सं | प | ० | | म. | पंचे | त्रस् | अ | | | के | स | के | ६ | भ | अ | सं | अ | स |
| ा. | . | . | ७ | | | . | ा. | ौ. | | | व. | ाम | द. | भा | ा. | ौप | . | ह | क |
| | प. | ६ | | | | | | १ | | | वि | ा. | विन | . | . | क्षा | | र | ा |
| | सं | अ | | | | | | अ | | | ना | छे | ा | ३ | | क्षा | | | र |
| | . | . | | | | | | ह | | | . | दो | | शु | | क्षा | | | अ |
| | अ | | | | | | | ा. | | | | | | भ. | | यो | | | ना |
| | . | | | | | | | २ | | | | | | | | . | | | क |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | ार |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इस प्रकार तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कायजोगि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्धाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दसपाणा, तिण्णि सण्णाओ, मणुस्सगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२६७।

नं.२६७ काययोगी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

| गु. | ज | प | प्रा | सं | ग. | इं. | का | यो | व | क | इ | सं | द. | ले | भ | स | सं | अ | उ |
|------|----|---|------|----|----|------|-------|----|---|---|------|-----|----|------|----|------|----|----|----|
| | ी. | . | . | . | | | . | . | . | . | ा | य. | | . | ा. | . | इ | ा. | . |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| १ | १ | ६ | १ | ३ | १ | १ | १ | १ | ३ | ४ | ४ | ३ | ३ | द्र. | १ | ३ | १ | १ | २ |
| अ | सं | प | ० | अ | म. | पंचे | त्रस् | अ | | | म | सा | के | ६ | भ | अ | सं | अ | स |
| प्र. | . | . | | ह | | . | ा. | ी. | | | ति | मा. | द. | भा | ा. | प | . | ह | क |
| | प. | | | ा. | | वि | | | | | . | छे | वि | . | . | क्षा | | ा. | ा. |
| | | | | ना | | . | | | | | श्रु | दो. | ना | ३ | | . | | ा. | अ |
| | | | | . | | | | | | | त. | प | | शु | | क्षा | | ना | ना |
| | | | | | | | | | | | अ | रि. | | भ. | | यो | | . | . |
| | | | | | | | | | | | व. | | | | | . | | | . |
| | | | | | | | | | | | म | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | न. | | | | | | | | |

अपुव्वकरणप्पहुडि जाव खीणकसाओ ति ताव कायजोगीणं मूलोघ-भंगो। णवरि ओरालियकायजोगो चेव सब्बत्थ वत्तव्वो।

कायजोगि-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वाणं, एओ जीवसमासो दो वा, छ पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-दोपाणा, खीणसण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगा

काययोगी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार इ पाण, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धी ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक; संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतक काययोगी जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान हैं । विशेष बात यह है कि काययोग आलाप कहते समय सर्वत्र केवल एक औदारिककाययोग ही कहना चाहिए ।

काययोगी सयोगिकेवली जिनके आलाप कहनेपर--- एक सयोगिकेवलि गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, अथवा समुद्घातकी अपेक्षा पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, चार प्राण और केवलिसमुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा दो प्राण; क्षीणसंज्ञास्थान, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग,

इदि तिण्णि जोगा, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति२६८ ।

नं.२६८

काययोगी केवली जिनके आलाप.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|------|----|----|-----|----|----|-----|---|---|----|----|----|----|---|----|----|---|
| गु. | ज | प | प्रा | सं | ग. | इं. | का | यो | वे. | क | इ | सं | द. | ले | भ | स | सं | अ | उ |
| | ी. | . | . | . | | | . | . | | . | ॥ | य. | | . | ।. | . | इ | ।. | . |

औदारिककाययोगी जीवोंके आलाप कहनेपर--- आदिके तेरह गुणस्थान, पर्याप्तक जीवोंके सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिककाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है; आहारक, साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी
